Bodhi-Path Year 2019 July Issue Volume 17 Page No 1-2

सम्पादिक

Dr. Sangh Mitra Baudh,

The Editor, Bodhi-Path

बुद्ध–धम्म के अनुसार जीवन की चरम उपलब्धि निर्वाण की प्राप्ति है। यही भगवान् बुद्ध के धर्म विनय का एकमात्र रस तथा ब्रह्मचरियवास का सर्वोत्कृष्ट फल है। यह एक सर्वमल विरहित अत्यन्त परिशुद्ध अवस्था है, जिसके अधिगम से जाति–जरा–व्याधि–मरण समन्वित भवचक्र सदा के लिए भग्न हो जाता है तथा लोकोत्तर सुख की प्राप्ति होती है।

भगवान् बुद्ध ने निर्वाण का उपदेश दिया। परन्तु निर्वृत्त होकर वह स्वयं यहाँ, इस जीवन में, रहे। यही उनका सर्वोत्तम उपदेश था। निर्वाण का आधार जीवन में है। वह एक वास्तविकता है, **दिट्ठ धम्म** (दृष्ट धर्म) है, देखी हुई वस्तु है। जीवन की विशुद्धि ही विमुक्ति के रूप में साधक के लिए प्रकटित होती है। यही निर्वाण है। विशुद्धि और निर्वाण दोनों एक हैं। **आचार्य बुद्धघोष** ने अत्यन्त सार्थकतापूर्वक कहा है **"विसुद्धीति सब्बमलविरहितं अच्चन्तपरिसुद्धं निब्बानं वेदितब्बं।"** सुत्त निपात के **चूल–वियूह–सुत्त** में भी निर्वाण को अंतिम शुद्धि कहा गया है। यह अन्तिम शुद्धि–रूपी निर्वाण केवल बुद्धि के चिन्तन या विमर्श के द्वारा प्राप्य नहीं। उसे जीवन में साक्षात्कार करना पड़ेगा, जिसके लिए आध्यात्मिक अनुभव की आवश्यकता है।

निब्बान की व्युत्पत्ति कई प्रकार से देखी जाती हैं इसमें 'नि' उपसर्ग है, जो निषेध अर्थ का द्योतक है। 'वान' का अर्थ तृष्णा है। अतः वान अभिसंज्ञक तृष्णा का अशेष निरोध ही निब्बान है–**'वानसङखाताय तण्हाय निक्खन्तत्ता निब्बानं' ति पवुच्चति।**

निर्वाण दो प्रकार का होता है–**'सउपादिसेस'** तथा **'अनुपादिसेस'**। पंचस्कन्ध को उपादि कहते हैं। जीवित अवस्था में राग, द्वेष, मोह का क्षय सउपादिसेस निर्वाण है।

इसे जीवनमुक्ति या अर्हत्व पद भी कहते हैं तथा शरीर नष्ट होने के बाद जिस निर्वाण की प्राप्ति होती है उसे अनुपादिसेस निब्बान कहते हैं।

निर्वाण के स्वरूप की चर्चा विविध रूपों में देखी जाती है। इसे एक भाव–रूप में चर्चित करते हुए–**'निब्बानं परमं सुखं,' 'सेवपदं,' 'अमतं पदं,' 'अनुत्तरंयोगक्खेमं,'** आदि पदों से इसकी अभ्यिक्ति की गई है। निर्वाणलाभ से प्राप्त सुख से उत्कृष्टतर अन्य सुख नहीं है। दूसरी ओर निर्वाण के स्वरूप का प्रतिपादन **'निरोध निब्बानं,' तण्हाय असेसविरागनिरोधो मुत्ति,' तण्हाय विप्पहानेन निब्बानं ति वुच्चति'**–आदि पदों से करते हुए इसे एक अभावरूप जैसा कहा गया है।

निर्वाण की स्थिति के सम्बन्ध में कहा गया है कि निर्वाण भय से शून्य है। निर्वाण में जल, पृथ्वी, अग्नि और वायृ प्रतिष्ठित नहीं होतं?, धारा रुक जाती है, भंवर चक्कर नहीं काटता तथा नाम और रूप दोनों विरुद्ध हो जाते हैं। ब्रह्मयाचना सुत्त में कहा गया है कि सभी संस्कारों का शमन, सभी उपाधियों से मुक्ति, तृष्णाक्षय, विराग, निरोध वाला **'निर्वाण'** है।

सम्यक् दृष्टि को निर्वाण की ओर ले जाने वाला कहा गया है। बुद्ध, धम्म एवं संघ में श्रद्धा तथा शील पालन को निर्वाण के लिए उदयगामी मार्ग कहा है। अनित्यता को समझने से निर्वाण की प्राप्ति बतलाई गई है।

प्रस्तुत अंक में बुद्ध के उपदेशामृतों से समन्वित विद्वजनों के लेखों को प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हुए हम अपार हर्ष की अनुभूति कर रहे हैं। पत्रिका के समृद्ध सम्पादन में उन लेखकों व विद्वानों का हम âदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनके लेखों एवं बहुमूल्य सुझाव द्वारा यह कार्य पूर्ण किया गया। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों के सहयोग से प्रस्तुत पत्रिका का उत्तरात्तर विकास होता रहेगा।

डॉ संघमित्रा बौद्ध